Different Administration Systems Part II

डोकलो सोहोर प्रशासनिक प्रणाली (खड़िया/खारिया जनजाति)

- खड़िया झारखंड की एक प्रमुख जनजाति है। यह प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड से संबंधित है।
- इस जाति के लोग झारखंड के गुमला, सिमडेगा और रांची, ओडिशा, छत्तीसगढ़ राज्य में फैले हुए हैं।
- खड़िया तीन प्रकार के होते हैं- पहाड़ी खड़िया, दूद खड़िया और ढेलकी खड़िया।
- गांव में महतो, पाहन और करताहा होते हैं।
- वे ठाकुर देव, धरती माई, ग्राम देव, नागदेव, बुरहा-बुरही और अग्नि देव आदि की पूजा करते हैं।
- एक क्षेत्र में, खारिया लोगों की पारंपरिक स्वशासन प्रणाली में महतो, पाहन और करताहा शामिल हैं। महतो गांव का प्रमुख व्यक्ति है।
- यह राजवंश एक पारंपरिक शब्द है। लेकिन उन्हें ग्रामीणों की सहमति से बदला जा सकता है।
- पाहन: गांव के त्योहारों में पूजा करने वाले व्यक्ति को पाहन कहा जाता है। इन्हें 'कालो' के नाम से भी जाना जाता है।
- करताहा: प्रत्येक गांव में एक करताहा होता है। ग्रामीण उसी की सलाह और अनुमति से काम करते हैं। जो व्यक्ति अपनी जाति के रीति-रिवाजों को ठीक-ठीक जानता है, उसे करताह के पद पर नियुक्ति का प्रस्ताव रखा जाता है।
- गांव में जब किसी परिवार को अपवित्र घोषित कर दिया जाता है तो उसकी शुद्धि के लिए पाहन (भात-भितर) जैसे क्षेत्र विशेष में पूजा की जाती है।
- आपस में विवादों को सुलझाने के लिए गांवों की सभी आस-पास की जनजातियां मिलकर एक क्षेत्रीय प्रशासन तंत्र का निर्माण करती हैं, जिसे खुंट के नाम से जाना जाता है। इसका अध्यक्ष केवल एक करताह से चुना जाता है। इस पोस्ट को 'खड़िया घाट' कहा जाता है।
- 1934-35 ई. के आसपास, जब शिक्षा के विकास के साथ पूरा आदिवासी समाज जाग रहा था, इस समय के आसपास, खड़िया जाति के नेताओं ने अपनी समस्याओं को संगठित करने, सशक्त बनाने और हल करने के लिए अखिल भारतीय महासभा का भी गठन किया। इसे 'डोकलो' के नाम से जाना जाता है। डोकलो के अध्यक्ष, जो पूरे खड़िया समाज के राजा हैं, को "डोकलो सोहोर" कहा जाता है।
- खड़िया भाषा में डोकलो का अर्थ है मिलना।
- करताह लोग बैठक बुलाने के लिए सभी व्यवस्था करते हैं। ये लोग साल में एक बार इकट्ठा होते हैं। इस सभा में खड़िया जनजाति के लोग डोकलो सोहोर को चुनते हैं। इनका कार्यकाल 3 साल का होता है।
- डोकलो सोहोर की अध्यक्षता में एक से अधिक गांव या गोत्र से संबंधित किसी भी समस्या का समाधान किया जाता है।

BYJU'S EXAM PREP
BYJU'S EXAM PREP SUBSCRIBE

- प्रत्येक गाँव का करताह खड़िया राजा (सोहोर) को घटना और उसके गाँव की समस्याओं से अवगत कराता है।
- गांव झगड़ा आदि तय करने के बाद राजा को रिपोर्ट पेश करता है। खडिया राजा सचिव (लेखाकर), खजांची (तिंजौकड़) और सलाहकार (दीवान) भी हैं।

मांझी परगना प्रशासनिक प्रणाली

- संथालों ने सौरिया-पहाड़िया जनजाति से मांझी प्रणाली प्राप्त की है। झारखंड में संथालों की जनजातीय आबादी सबसे अधिक है।
- संथाल परगना झारखंड में संथालों का मुख्य निवास स्थान है।
- बंगाल में इन्हें 'सौतार' कहा जाता था। वहां से आकर ये पहाड़िया समुदाय के लोग थे जो संथाल परगना के मूल निवासी थे।
- जब 1765 ई. में अंग्रेजों ने प्रवेश किया, तो पहाड़िया ने अधीनता स्वीकार करने से इनकार कर दिया। स्वतंत्रता-प्रेमी पहाड़िया जनजाति को नियंत्रित करने में विफलता के कारण संथालों और पहाड़िया के बीच संघर्ष हुआ।
- 1832-33 में दामिन-ए-कोह अंचल की स्थापना 1338 वर्गमी. यह भूभाग पहाड़िया जनजाति को आवंटित किया गया था, और इसके चारों ओर फैले इलाके संथालों के बसने के लिए आरक्षित थे।
- गांव का प्रबंधन मांझी द्वारा किया जाता है, जो गांव का मुखिया और उपासक भी होता है। उनकी सहायता गिरि, कोटवार और भंडारी या गुंडैत द्वारा की जाती है।
- विभिन्न गांवों के बीच विवादों को सुलझाने के लिए दो प्रकार के अंतर सरकारी संगठन हैं।
- 15 से 20 गांवों में एक नायक होता है और 70 से 80 गांवों में एक सरदार होता है। सरदार के पास पूरे क्षेत्र की जिम्मेदारी है। ब्रिटिश शासन के दौरान सरदार, नायक और मांझी को मान्यता दी गई और उन्हें मासिक वजीफा दिया गया।
- इसमें एक सहायक होता है, जिसे 'जोगमांझी' कहा जाता है।
- गांव में एक दूत के रूप में गोडैत होते हैं, जो ग्राम सभा या त्योहार के बारे में ग्रामीणों को सूचित करते हैं, उन्हें एक जगह इकट्ठा होने के लिए कहते हैं और मांझी की आज्ञा का पालन करते हैं।
- सबसे कड़ी सजा 'बिटलाहा' (सामाजिक परोपकार) की सजा है।
- 5-8 गांवों की मांझी को देशमांझी कहा जाता है। जिन मामलों का समाधान नहीं होता है, उन्हें निर्णय के लिए देशमांझी भेजा जाता है।
- 15-20 गांवों से मिलकर एक परगना बनता है, जो एक आंतरिक संगठन है। इसके सिर को 'परगनाट' कहते हैं।

BYJU'S EXAM PREP
BYJU'S EXAM PREP SUBSCRIBE